International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 14-11-2021, Accepted: 29-11-2021, Published: 15-12-2021
Volume 7, Issue 6, 2021, Page No. 43-44

बाल्यावस्था में बालकों के विकास पर मीडिया के प्रभाव

डॉ. सरिता वर्मा[1], अंजली मिश्रा[2]

[1] विभागाध्यक्षा, महिला महाविद्यालय, किदवई नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

[2] शोध छात्रा, नॉर्थ ईस्ट फ्रन्टियर टेक्निकल विश्वविद्यालय, एलो, वेस्ट साइंग, अरूणाचल प्रदेश, भारत

सारांश

विद्यालय जाने वाले बालकों में सर्वाधिक 90% बच्चे टी0वी0 देखते हैं तथा 10% बच्चे टी0वी0 देखना पसन्द नहीं करते। सर्वेक्षित बच्चों में रात्रि में टी0वी0 देखने वाले बच्चों का सर्वाधिक 40% है। सुबह के समय कोई भी बच्चा टी0वी0 नहीं देखता। दोपहर में 20% षाम को 30% तथा 10% बच्चे कभी भी टी0वी0 नहीं देखते। सर्वाधिक बालक नेषनल जियोग्राफिक चैनल पसन्द करते हैं। 20% स्टार प्लस 10–10% बच्चे कार्टून तथा डिजनी तथा 6.67% जी0टी0वी0 तथा कलर्स चैनल पसन्द करते हैं। सर्वाधिक 60: बालक संगीत के कार्यक्रम 30% विज्ञान आधारित तथा 10% बालक फिल्में देखना पसन्द करते हैं। नाटक, समाचार, आध्यात्मिक कार्यक्रम बच्चे पसन्द नहीं करते। सर्वाधिक 39-33% बच्चों की रुचि खेल समाचार 30% बच्चे सामाजिक, 10-67% बच्चों की दुनिया, 15% सूचकांक तथा सबसे कम 5% बच्चे राजनैतिक पत्र–पत्रिकाएँ पढ़ते हैं। सर्वाधिक 50% बच्चे मानते हैं कि कम्प्यूटर का अच्छा प्रभाव तथा 10% के अनुसार बुरा प्रभाव पड़ता है।

मूल शब्दः कम्प्यूटर, आध्यात्मिक, राजनैतिक, सर्वेक्षित, मीडिया

प्रस्तावना

बाल्यावस्था एक ऐसी अवस्था है जो बच्चों के लिए एक पूर्ण अवस्था है। बालकों के सम्बन्ध में यह पूर्णतः परम्परागत विश्वास रहा है कि बाल्यावस्था विकास की एक आन्तरिक अवस्था है। इस अवस्था में बालक शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक गुणों में परिवर्तन की दिशा में होते हैं। Childhood की उत्पत्ति लेटिन भाशा से हुई है जिसका अर्थ है ''बचपन की ओर बढ़ना''। बाल्यावस्था एक ऐसी अवस्था है जो बचपन की समाप्ति तथा वयस्कावस्था प्रारम्भ होने तक रहती है। इस अवस्था में विकास की गति तीव्र होती है। आधुनिक युग में आज बाल्यावस्था के अन्तर्गत भौतिक परिपक्वता के साथ–साथ, मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, स्वास्थ्य पर भी अध्ययन किया जाता है। बाल्यावस्था में बालक–बालिका में एक नयापन दिखायी देता है। इसलिए इसे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एवं आनन्दमयी अवस्था कहते हैं। गोल्डेन ऐज भी कहते हैं हमारा अपना देश हो या संसार का कोई भी देश बाल्यावस्था को एक महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। यह सत्य है कि बच्चे देश की नींव है। इस नींव का सृजन उसकी माँ एवं परिवार के अन्य सदस्यों के ऊपर आधारित होता है वही बाल्यावस्था में आकार बच्चे स्वयं का अच्छा, बुरा सोचना प्रारम्भ कर देते हैं।

दुनिया रूपी का इस गुलशन को बच्चों रूपी फूलों की खुशबू तथा सुन्दरता ने ही गुलजार किया है। इन नन्हें–मुन्ने की चहल–पहल के बिना क्या घर, परिवार, समाज तथा राष्ट्र की कल्पना की जा सकती है, एक स्वस्थ तथा सामान्य शिशु से हमारे सब दुःखों को भुला देने की क्षमता होती है। बच्चों का उचित पालन–पोषण करके उसे सम्पूर्ण व्यक्ति के रूप में विकसित करना वास्तव में एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। शिशु कच्ची मिट्टी भाँति होता है, उसे कैसा रूप दिया जाना है, यह इसके लिए जाल मन की कोमलता व सरलता को समझना आवश्यक है। बालक का विकास एवं वृद्धि सामान्य भाषा में इनके अर्थ में अन्तर नहीं दिखायी देता है, लेकिन बच्चों में जो वृद्धि होती है वही विकास है। बच्चों के व्यक्तित्व में होने वाली सम्पूर्ण वृद्धि जिसमें शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांवेगिक सभी प्रकार शारीरिक व मानसिक क्षमताओं का उत्पन्न होना, परिपक्व होना विकास होना होता है। बच्चों के जीवन के आरम्भ के दिनों में घर बालक का समुचित विकास होना है।

बालक के विकास एक ऐसी क्रिया है। जिसका प्रारम्भ गर्भधान से उसके मन के बारे में अच्छी तरह से जानना आवश्यक है। बच्चों का अध्ययन वही व्यक्ति अच्छी प्रकार से कर सकता है। जो आत्मनिरीक्षण की शक्ति रखता है। बालक के विकास के अध्ययन में सफलता प्राप्त करने का सबसे बड़ा साधन हैं उनके साथ, मित्रता का व मेलजोल का घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करना।

विकास के अध्ययन को जानने से पूर्व यह जानना आवश्यक है कि व्यक्ति के जीवन में बाल्यावस्था का क्या महत्त्व है।

महत्व

बालकों के सन्तुलित विकास के लिए उनके चरित्र का गठन ठीक दिषा में होना चाहिए। बाल विकास के द्वारा उन मूल तत्त्वों का पता चलता है जो बालकों के चरित्र गठन में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। अपना देश सच्चे अर्थों में समद्ध व स्वस्थ तभी हो सकता है, जब इसकी इकाई बालक–बालिकाओं ही सक्षम व स्वस्थ्य होगी। अतः बाल विकास राष्ट्र की एक महत्त्वपूर्ण माँग बन चुकी है।

बाल विकास का मुख्य उद्देश्य बालक के विकास व व्यवहार से सम्बन्धित भविश्यवाणी करता है, बालक के माता–पिता व अभिभावकों को बालक के व्यवहार की उचित दिशा देने के लिए मार्गोपदेशन की आवश्यकता पड़ती है। बालक के विकास व व्यवहार के सम्बन्ध में मात्र भविष्यवाणी व मार्गोपदेशन ही निदान नहीं है। बल्कि उन्हें नियंत्रण की आवश्यकता होती है।

उद्देश्य

- हमें बालकों के सम्बन्ध में पूरी–पूरी जानकारी प्राप्त हो जाती है और इस जानकारी का उपयोग बाल विकास में किया जाता है।

- बच्चों का शैक्षिक पारिवारिक, सामाजिक व आर्थिक स्तर ज्ञान करना।
- बालकों के सन्तुलित विकास के स्तर द्वारा सहन की जाने वाली समस्याओं का पता लगाना।
- बच्चों के विकास के स्तर पर उपलब्ध शैक्षिक व मीडिया के प्रति बच्चों के व्यवहार का अध्ययन करना।
- विकास के स्तर पर शिक्षा एवं मीडिया के विकास कार्यों हेतु जनसम्पर्क करना तथा उचित परामर्श देना।

तालिका 1: समाचार पत्र आने के आधार पर

	इकाइयाँ	**प्रतिशत**
दैनिक	180	60-00%
साप्ताहिक	60	20-00%
पाक्षिक	3	1-00%
मासिक	57	19-00%
योग	300	100%

सन्दर्भ सूची

1. Abrol U, Khan N. “Impact of Television on life style of children.” Researches in child and Adolescent Psychology Seminar Reading, Ashok Kr. Srivastava [NCERT] June, Jyaistna -1915, 1993.
2. Aghi M. “Children and Television. The what and How” Eve’s weekly, Bombay, Feb. 16.22, pp. 2 Almedia, A.R. and J.A. Silav (1982) Television Parents and Children: A study of daily preference and habits psychological abstracts,1980:68(1):620.
3. Anuradha K, Television Viewing. Its effect on children’s personal and educational development. Discovery Publication House, New Delhi, 1994.
4. Barnett UB, Brahad P. Media, Knowledge and Power Croom Helm London, 1987.
5. Chawla A. T.V. Viewing Survey, Operational Research Group, Baroda, 1986.
6. Clarke A. Steward and Friedman: Child Development Infancy through Adolescence, PP. Comstock, G: Television in America, London, Sale Publications, 1980, 405-407.
7. Dworetzky JP. Introduction to child Development: Sixth Edition, 441-442.